'समानो मन्त्रः समितिः समानी'

UNIVERSITY OF NORTH BENGAL

B.A. Honours 1st Semester Examination, 2023

CC2-HINDI (102)

हिंदी कविता

(आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता)

Time Allotted: 2 Hours | Full Marks: 60

The figures in the margin indicate full marks.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***चार*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए – 3×4 = 12

(क) निर्गुण एवं निराकार का अंतर स्पष्ट कीजिए।

(ख) वात्सल्य वर्णन से क्या तात्पर्य है ?

(ग) 'अनबूड़े बूड़े' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) घनानंद को 'रीति मुक्त' कवि क्यों कहा गया है ?

(ङ) मीरा के 'राम रतन घन' की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(च) जायसी की तीन रचनाओं के नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं ***चार*** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए – 6×4 = 24

(क) "दाख छांडि कैं कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै।
मूरी के पातन कै कैना को मुकताहल दैहै।"

(ख) "राम नाम के पटंतरै देबे कौं कछु नाहिं।
क्या लै गुरू संतोखिए, हौंस रही मन माँहि॥"

(ग) "प्रीत कियाँ सुख नहिं मोरी सजनी, जोगी मीत न कोई।
रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियां बिन मोई।
ऐसी सूरत या जग मांही, फेरि न देखी सोई॥"

(घ) "सैसव जौवन दरसन भेल, दुहुदल-बलहिं दन्द परि गेल॥
कबहु बाँधए कच कबहुँ बिथार, कबहुँ झाँपए अंग कबहुँ उघार॥
धीर नयन अधिर कछु भेल। उरज उदय-थल लालिम देल॥
चपल-चरन, चित चंचल मान, जागल मनसिज मुदित नयान॥"

(ङ) "ए रानी ! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी॥
जौ लागि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजु॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरबर-पाली॥"

(च) ''लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनीजलजावलि द्वै।
अंग-अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ॥''

3. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए – $12 \times 2 = 24$

(क) कबीर की समाज-दृष्टि का विवेचन कीजिए।

(ख) 'भ्रमरगीत' का उद्देश्य प्रतिपादित कीजिए।

(ग) घनानंद एवं बिहारी के प्रेम का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए।

(घ) मीरा की काव्यगत विशेषताओं पर आलोकपात कीजिए।

——×——